हज़रत अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु
प्रतिष्ठा व उत्तमता

अल्लाह तआ़ला ने इ़मामों के अम्बया सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की पावन निसबत के द्वारा अहले बैत किराम, सहाबा इ़ज़ाम रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम को सविशेष शान तथा विसेष उत्तमता प्रदान की।

इन के सरों पर आदर व सम्मान का ताज सजाया तथा इन्हें शराफत व बुज़ुर्गी का वरदान उजागर से धनी व मालामाल फरमाया।

अल्लाह तआ़ला ने अहले बैत किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम को प्रत्येक प्रकार कि अपवित्रता व अशुद्धता चाहे वह सोंच-विचार की हो या विश्धास, ज्ञानी हो या अ़मली, ज़ाहिरी हो या बातिनी प्रत्येक प्रकार की अपवित्रता व गंदगगी से पवित्र व शुद्ध रखा तथा इन की पवित्रता व शुद्धता के वर्णन में आयत प्रकट हुईः-

भाषांतरः- अवश्य अल्लाह तआ़ला तो यही चाहता है ऐ नबी के घराने वालो के तुम से हर अपवित्रता व गन्दगी को दूर रखे तथा तुम्हें पवित्र व शुद्ध कर के पाक-साफ़ कर दे।

(सुरह अल अहज़ाबः 33:33)

तथा सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम से संबंधित अपनी सन्तुष्टी व प्रसन्नता का इस प्रकार प्रदर्सन कियाः-

भाषांतरः- अल्लाह तआ़ला सम्पूर्ण (सहाबा किराम) से राज़ी (सन्तुष्ट) हो गया तथा वह अल्लाह तआ़ला से राज़ी हो गए, एवं अल्लाह तआ़ला ने इन के लिए ऐसा बाग़ तैयार किए हैं, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, वह इन में सदैव रहेंगे। यह बहुत बड़ी सफलता है।

(सुरह अत तौबाः 09:100)

इसी प्रकार सुरह अन निसा में अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- और अल्लाह तआ़ला ने सम्पूर्ण सहाबा किराम से जन्नत का वचन दिया है।

(सुरह अन निसाः 04:95)

हमारे लिए कृपा व मुक्ति का माध्यम यही है के हम अपने दिलों में अहले बैत किराम की मुहब्बत से आबाद करें तथा सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम की मुहब्बत व स्नेह से अपने हृदय को रोशन व दीप्तिमान करें।

क्यों के यही वह पावन लोग हैं जो हमारी मुक्ति व मोक्ष का माध्यम भी हैं तथा हमारे लिए मार्गदर्शन का स्तर भी हैं।

इन उच्च लोगों में कुछ वह मान्य हस्तियां हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने अहले बैत नबूवत तथा सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के साथ नाता रखने की कृपा से भी संबोधित किया है तथा सहाबियत (संगति) के उच्च दर्जे से भी आभूषण फरमाया है।

इन्हीं पावन व उच्च व बेमिसाल लोगों में एक आदरणीय व माननीय हस्ती, सैयदुश शुहदा शेरे खुदा सैयदना अबु अ़म्मारह अ़मीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु की पावन जात है।

क्यों के शव्वाल की 11 दिनांक को और एक रिवायत के अनुसार 7 या 15 शव्वाल को इसलाम का एक विशाल युद्ध *ग़ज़वे-उहद* हुआ तथा इस युद्ध में 70 सहाबा किराम शहीद हुए।

जिन में सरकार दो आ़लम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम के चाचा जान सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु हैं।

अल्लाह तअ़ाला का आदेश हैः-

भाषांतरः- और जो लोग अल्लाह तअ़ाला के मार्ग में शहीद किए गए इन्हें हरगिज़ मुर्दा ना समझना बल्कि वे अपने रब के पास जीवित हैं तथा इन को रोज़ी मिल रही है।

(सुरह आले इ़मरानः 03:169)

इस आयत में सामान्य रूप से सम्पूर्ण शहीदों के जीवन तथा इन्हें मिलने वाले वरदान व नेअ़मतों का वर्णन किया गया है। वास्तव में यह आयत शहीदों के सेनापति सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु तथा आप के साथ शहीद होने वाले लोगों की सान व प्रतिभा में प्रकट हुई।

जैसा के मुसतदरक अ़ला सहिहैन में रिवायत हैः-

भाषांतरः- हज़रत अबदुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है, इन्हों ने फरमायाः यह आयत भाषांतरः- और जो लोग अल्लाह तआ़ला के मार्ग में शहीद किए गए इन्हें हरगिज़ मुर्दा ना समझना बल्कि वे अपने रब के पास जीवित हैं तथा इन को रोज़ी मिल रही है। सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु तथा आप के साथ शहीद होने वालों की शान व वैभव में प्रकाश हुआ।

(अल मुसतदरक अला सहिहैन, हदीस संख्याः 3414)

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से नाता व सम्बन्ध

सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को रहमत वाले नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से नाता व स्नेह भी प्राप्त है तथा रिश्ते रज़ाअ़त भी, आप नसबी रिश्ते के अनुसार से सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के चाचाजान हैं तथा क्यों के हज़रत सवैबा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को भी दूध पिलाया है, इस अनुसारसे आप सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के दूध शरीक भाई भी हैं। जैसा के सीरत की नामवर पुस्तक *अल रौ़ज़ुल अनफ* में वर्णन हैः-

भाषांतरः- सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के इस्लाम स्वीकार करने का वर्णन करते हुए हज़रत इ़ब्न इसहाख रहमतुल्लाहि अलैह ने कहाः आप के पिता हज़रत हालिय बिन्त उहीब बिन अ़ब्द मुनाफ बिन ज़हरह हैं, तथा हज़रत उहीब सैयदा आमिना बिन्त वहब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा के चाचाजान हैं। हज़रत अबदुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने हज़रत हालिय से विवाह किया तथा इस ज़माने में आप के नंदन सैयदना अबदुल्लाह रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने सैयदा आमिना रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा से विवाह किया। तो अबदुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को हज़रत हालिय से सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु जन्म हुए एवं हज़रत अबदुल्लाह रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को हज़रत आमिना रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा से हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम जन्म हुए। फिर हज़रत सुवैबा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा ने इन दोनों को दूध पिलाने कि कृपा प्राप्त की।

(अल रौज़ अ अनफ, इस्लाम हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु)

सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु तथा रिसालत के शान की रक्षा

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने 40 वर्ष कि उम्र मुबारक में नबूवत की घोषणा की तथा लगातार इसलाम धर्मकी प्रचार व प्रसारण फरमाते रह। जिस के परिणाम में इसलाम प्रगति व उन्नति करता हुआ अमन व शान्ति की चादर फैलाता जा रहा था। दिन पे दिन इसलाम के क्षेत्र में लोग आने लगे।

अब ऐसे लोगों की बारी थी जो जलाल, इज्जत व सम्मान रखते हों तथा मक्के वालों में इन का आदर हो तथा इन की बात टाली ना जाती हो।

अर्थात नबूवत कि घोषणा के 6 वर्ष ऐसी पावन हस्तियां इस्लाम में प्रवेश हुईं, जिन से इसलाम का झंडा अधिक बुलं हुआ तथा मुसलमान प्रकट रूप से सत्य रब की इ़बादत करने लगे।

सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से बेहद मुहब्बत व प्रेम करते थे तथा खुरैश के सरदारों में आप बीड बहादुरी व वीरता रखते थे। सवेरे शिकार के लिए जाते तो शाम घर वापिस लौटते। फिर कअ़बा के तवाफ के लिए आते। इस के बाद खुरैश के सरदारों में बेठते थे।

एक दिन दिनचर्या के अनुसार जब शिकार से वापिस लौटे तो आप की बहन ह़ज़रत सफिय रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा ने कहाः कया आप को मालूम है के आज अबु जहल ने आप के भतीजे के साथ कैसा अनादरपूर्ण व्यवहार किया?

यह सुन कर सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु अपनी तीर-कमान लेकर अबु जहल के पास पहुंच गए तथा कमान से बडी शक्ति के साथ इस के सर पर ऐसा मारा के इस का सर फट गया तथा फरमायाः कया तू नहीं जानता के मैं भी इन्हींके धर्म पर हुँ। यह देख कर बनी मखदूम क़बीले के लोग अबु जहल की मदद के लिए आय तो इस ने सोंच कर के कहीं बनी हाशिम बहुत कठोर मखदूम के साथ युद्ध ना हो जाए।

कहने लगाः जाने दो! मैं ने आज इन के भतीजे को बहुत कठिन शब्द कहे।

(शरह अल ज़ुरखानी अ़ला अल मवाहिब, जिल्द 1, पः 477, सबूबुल वर रिशाद, जिल्द 2, पः 332, अर रौज़ा अल अनफ, इसलाम हमज़ा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु, जिल्द 2, पः 43)

अपकी औलाद

सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु की औलाद से संबंधित जीवन वृत व तारीक़ के पुस्तकों में विस्तार मिलता है के आप के2 नंदन तथा 3 बेटियां हैं। जैसा के सबूलुल हुदा वर्रिशाद में वर्णन हैः-

भाषांतरः- हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु को दो नंदन 1- हज़रत अम्मारह रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु 2- हज़रत यअ़ला रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु हैं। तथा आप को 3 बेटियां हैं, एक बेटी का नामः 1- हज़रत उ़मामह रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हा जिन्हें --- *अल्लाह* भी कहा जाता है। 2- और दूसरी बेटी का नामः हज़रत उम्मुल फ़ुज़ैल रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हा। 3- और तीसरी बेटा का नामः हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हा है।

(वउखवाला सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम, जिल्द 11, पः 82)

सरकार सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम की दुआ की बरकत से इस्लाम स्वीकार

सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु जो इस्लाम से आभूषण हुए वास्तव में यह सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की दुआ़ स्वीकृत का परिणाम था। सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु इरशाद फरमाते हैः-

भाषांतरः- घटना यह हुई के जब मुझ पर क्रोध पराजित किया तो मैं ने कहा के मैं अपनी क़ौम व जाति के धर्म पर हुं, तथा मैं ने बडी कशमकश में इस महत्व मामले में इस प्रकार रात गुज़ारी के क्षण भर भी ना सोया, फिर कअ़बे शरीफ के पास आया तथा अल्लाह सुभाना वतआ़ला के दरबार में विनती की के अल्लाह तआ़ला मेरे सीने को सत्य के लिए खोल (देहांतः तथा मुझ से शक व संदेह को मिटा दे, तो मैं ने अभी दुआ़ समाप्त भी ना की थी के बातिल (असत्यता) मुझ से दूर हो गया तथा मेरा हृदय विश्वास की दौलत से धनी हो गया। फिर सवेरे मैं हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ एवं अपनी सम्पूर्ण स्थिति वर्णन की तो हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने मेरे लिए दुआ़ फरमाई के अल्लाह तआ़ला मुझे इस इसलाम के वरदान पर हमेसां स्थिर व अटल रखे। जिस समय आप ने इस्लाम स्वीकार किया यह कथन कहेः-

मैं अल्लाह तआ़ला की प्रशंसा व गुणगान करता हुँ तथा इस का धन्यवाद करता हुं के इस ने मेरे हृदय को इसलाम तथा सत्य धर्म के लिए खोल दिया।

यह वह धन्य धर्म है जो ऐसे पालनहार की ओर से आया है जो बन्दों की खबर रखने वाला है तथा उन पर महरबान व दयावान है।

जब इसी अल्लाह तआ़ला की आयतें हमारे सामने पढी जाती हैं तो सम्पूर्ण बुद्धि रखने वाले व्यक्ति के आंसू बहने लगते हैं।

यह वह आदरणीय अहकाम हैं के उन की हिदायत व मार्गदर्शन देने के लिए हज़रत अहमद मुजतबा मुहम्मद अ़रबी सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ऐसी रोशन आयत लाय हैं जिन के प्रत्येक अक्षर में मार्गदर्शन व हिदायत है।

तथा हज़रत अहमद मुजतबा सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की ओर से हममें रूपांतर हैं तथा आप के हर आदेश को समापन किया जाता है। तो ऐ लोगो इन की शिक्षा को झूठ के द्वारा मत छिपाओ।

(अल रौज़ा अल अनफ, इसलाम हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु, जिल्द 2, पः 43)

सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु का सीना नूर से रोशन – क़ुरान करीम की गवाही

मानव की खुशी तथा कृपा यह है के वह इसलाम के दामन से संयुक्त रहे। इ़मान के कांति व तेज से अपने मन व हृदय को रोशन व दीप्तिमान करे। इसी लिए मोमिन बन्दे की आरज़ू व अभिलाषा व कामना होती हैके जब तक वह जीवित रहे इसलाम पर अटल व स्थिर रहे तथा मृत्यु भी आए तो इमान की स्थिति में आए तथा इस की समाप्ति इमान पर हो। यह तो सामान्य रूप से सम्पूर्ण इ़मान जाति की स्थिति है।

किन्तु सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की पावन जात के गुण वह है जिन के सीने को अल्लाह तआ़ला ने इसलाम के लिए खोल दियातथा उसे इ़मान के नूर से आभूषणकर दिया था।

सुरह ज़ुमर में अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- भला जिस व्यक्ति का सीना अल्लाह तआ़ला ने इसलाम के लिए खोल दिया एवं वह अपने रब की ओर से प्रकाश में है (तो कया वह कठोर दिल काफिर के समान होगा) तो इन के लिए खराबी है जिनके हृदय व दिल अल्लाह तआ़ला की याद से कठोर हो चुके हैं तथा यही लोग खुली गुमराही मे हैं।

(सुरह अज़ ज़ुमरः 39:22)

इस आयत में सामान्य रूप से इन लोगों का वर्णन किया गया जिन के सीनों को अल्लाह तआ़ला ने इसलाम के लिए खोल दिया है तथा इन्हें रोशन व दीप्तिमान भी फरमाया दिया है। अधिक इन के आदर व सम्मान का प्रकट करते हुए फरमाया के यह लोग कभी भी इस व्यक्ति के समान नहीं हो सकते जिस का दिल अल्लाह तआ़ला की याद से ग़ाफिल है।

अतः अ़ल्लामा इसमाई़ल हख्खी रहमतुल्लाहि अलैह ने "तफसीर रूह अल बयान" में लिखा है के यह आयत करीमा विशेष रूप से सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु तथा सैयदना अ़ली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की शान व प्रतिभा में प्रकट हुईं। जैसा के तफसीर रूह उल बयान में हैः-

भाषांतरः- इस बात को बुद्धि में रख लो के यह आयत इन लोगों के लिए प्रकट हुई हैं जिन के सीनों में इ़मान का दीपक रोशन कर के इन्हें इसलाम के लिए खोल दिया गया हो। अधिक यह भी वर्णन किया गया है के यह आयत करीमा सैयदना अ़मीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु तथा सैयदना अ़ली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की शान व प्रतिभा में एवं अबुलहब तथा इस के लडके की आलोचना व विवेचना में प्रकट हुई। क्यों के सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु तथा सैयदना अ़ली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु वह आदरणीय लोग हैं जिन के सीने को अल्लाह तआ़ला ने इसलाम के लिए खोल दिया है तथा अबु लहबऔर इस का लडका इन लोगों में से है जिनके दिल कठोर हो गए हैं। तो अल्लाह तआ़ला नी विशिष्ठ रहमत इस सौभाग्यशाली के लिए है जो इसलाम से उजागर हो गए तथा अल्लाह तआ़ला का ग़ज़ब इस के लिए जिस का दिल कठोर हो गया है।

(तफसीर रूह उल बयान, सुरह अज़ ज़ुमरः 39:22)

धन्य उपाधि

सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को जिन धन्य उपाधि से याद किया जाता है इन में से चंद यह हैः-

1- सैयुदुश शुहदा (शहीदों के मुखिया)।
2- असदुल्लाह
3- असदुर रसूल
4- अफज़ल शुहदा
5- फाइ़ल अल क़ैरात।

(नेकियाँ करने वाले)

6- काशिफ अल करबात (मसाइब को दूर करने वाले)।

सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को आप का नाम भी प्रिय

सयैदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु वह सम्मानित सहाबी हैं के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम केवल आप की जात ही से मुहब्बत नहीं करते बल्कि आप का नाम भी अत्यन्त पसंद करते थे। जैसा के इस रिवायत से स्पष्ठ हैः-

भाषांतरः- हज़रत जाबिर बिन अबदुल्लाह रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है, इन्हों ने फरमायाः हमारे क़बीले के एक व्यक्ति को लडका पैदा हुआ, तो इन्हों ने निवेदन किया के इस लडके का कया नाम रखा जाए? तो हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने अनुदेश फरमायाः मुझे सब से अधिक प्रिय जो नाम है वही इस लडके का नाम रखा जाए.(मुझे (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) सब से पसंदीदा नाम) "हमज़ा बिन अबदुल मुत्तलिब" रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु का है।

(अल मुसतदरक अला सहिहैन लिल हाकिम, हदीस संख्याः 4876)

सैयदना अमरी हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने हज़रत जिब्रील अलैहिस सलाम को देखा

सैयदना अ़मीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु ने इ़मान की स्थिति में हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम का चहरे अनवर देख कर सहाबियत का विशाल स्तर प्राप्त किया तथा इसी सत्य के पैगम्बर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम की सेवा में एक विनती किया के वह अल्लाह की वही के मुखिया हज़रत जिब्रील अलैहिस सलाम की सच्ची सूरत में देखना चाहते हैं।

सरकार पाक सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम नमाज़ इस विनती को स्वीकार किया। जब जिब्रील अमीन बारगाह नबवी सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम में उपस्थित हुए तो सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु से कहा के ऊपर देखा- सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु ने जब नेत्र उठाई तो कया देखते हैं के सामने हज़रत जिब्रील अमीन अलैहिस सलाम हैं। अर्थात इ़माम बैहखी रहमतुल्लाहि अलैह ने "दलाइल उन नबूवह" में रिवायत व्याख्या करते हैः-

भाषांतरः- हज़रत अ़म्मार बिन अबु अ़म्मार रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु से वर्णित है के हज़रत हमज़ा बिन अबदुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु ने निवेदन कियाः या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम! मुझे जिब्रील अमीन अलैहिस सलाम का इन की सत्य स्थिति व शकल में दीदार करवाइए। तो आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम) ने आदेश कियाः आप इन्हें सत्य स्थिति में नहीं देख सकते। इन्हों ने निवेदन कियाः अवश्य मैं नहीं देख सकता, किन्तु आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम) मुझे दिखाइए। आप ने आदेश दियाः बैठ जाओ। जब वह बैठ गए, तो हज़रत जिब्रील अमीन रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु कअ़बे की इस लकडी पर उतर आए जिस पर मुशरिकीन तवाफ के समय अपने कपडे डाला करते, फिर हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम ने

आदेश फरमायाः अपने नेत्र उठाओ और देखो। इन्हों ने अपनी आंखें उठाई तथा हज़रत जिब्रील अमीन अलैहिस सलाम के दोनों खदमों को देखा जो ज़मरूद के प्रकार हरीभीर खेती की तरह दिखाई दे रहे थे। तो (कसरत अनवार के कारण) से आप पर बेखुदी तारी हो गई।

(दलाइल उन नबूवह लिल बैहखी, हदीस संख्याः 3010)

हदिय दुरूद मीज़ान में सब से भारी कर्म

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की पावन सेवा में दुरूद शरीफ पेश करा यह वह अल्लाह तआ़ला का आदेश है के अल्लाह तआ़ला ने ना केवल बन्दों को इस का आदेश दिया बल्कि वह खुद अपने हबीब पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम पर दुरूद शरीफ भेजता है।

इसी लिए सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने समुदाय को सन्देश दिया अधिकता व कसरत से दुरूद शरीफ का प्रबन्ध करें। क्यों के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की पावन सेवा में दुरूद शरीफ पेश करना मीज़ान में सब से अधिक भारी कर्म है।

मेअ़राज की यात्रा के अवसर पर सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने जन्नत में देखा के वह हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का स्वागत कर रहे हैं तथा इन से अनुदेश किया के तुम्हारी नज़र में प्रिय व मनोहर कर्म कौनसा है?

तो इन्हों ने यही निवेदन किया के हदिय दुरूद शरीफ सर्वश्रेष्ठ कर्म तथा आ़माल के पुस्तक में सब से महत्व चीज़ तथा अनमोल संचयन है। जैसा के *नज़हतुल मजालिस* में रिवायत हैः-

भाषांतरः- हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से वर्णित है, आप ने फरमाया के मेअ़राज की रात जब मैं जन्नत में प्रवेश किया तो हमज़ा बिन मुत्तलिब रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने मेरा स्वागत किया, मैं ने इन से पूछा के वह कौनसा कर्म है जिस को सब से अधिक उत्तमता वाला, अल्लाह तआ़ला के दरबार में प्रिय तथा मीज़ान में सब से अधिक भारी समझते हैं ? इन्हों ने निवेदन कियाः आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) की पावन सेवा में दुरूद शरीफ पेश करना तथा आप की प्रतिभा व शान वर्णन करना, अधिक हज़रत अबु बक्र सिद्दीख रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु तथा हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के लिए अल्लाह तआ़ला से रहमत की विनती करना।

(नज़हतुल मजालिस, जिल्द 1, पः 348)

जन्नत में उच्च स्थान

सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को अल्लाह तआ़ला ने सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से नज़दीकी व पावन संगत से जन्नत के उच्च स्तर पर आभूषण किया। जैसा के अभी वर्णन रिवायत से मालूम हुआ के आप ने मेअ़राज की यात्रा के अवसर पर जन्नत में सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का स्वागत किया, इसी प्रकार इ़माम हाकिम रहमतुल्लाहि अलैह की मुसतदरक तथा इ़माम जलाल उद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि अलैह की जामअ़ अल हादीस में रिवायत हैः-

www.Ziaislamic.com

भाषांतरः- हज़रत सैयदना अबदुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है, इन्हों ने फरमायाः हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः पिछली रात जब मैं (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) जन्नत में प्रवेश हुआ तो मैं ने देखा के (हज़रत) जअ़फर (रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु) जन्नत में फरिशतों के साथ परवाज़ कर रहे हैं तथा (हज़रत) हमज़ा (रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु) एक विशाल पलंग पर टेक लगाए बैठे हैं।

(अल मुसतदरक अला सहिहैन लिल हाकिम, हदीस संख्याः 4878, जामअ़ अल हादीस लिल सुयूती, हदीस संख्याः 12265)

आसमानों में आप का धन्य वर्णन

सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की जीवन वृत के वर्णन तथा आप के धन्य वर्णन को अल्लाह तआ़ला ने यह सम्मान व इज्जत तथा स्वीकृत व बुलंदी प्रदान की है के आप का वर्णन केवल धरतीवाले ही नहीं करते बल्कि आकाश वाले भी आप का वर्णन व जिक्र करते हैं। जैसा के मुसतदरक अला सहिहैन में रिवायत हैः-

भाषांतरः- सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम ने फरमायाः जब सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु शहीद हुए तो हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमाने लगेः आप की जुदाई से बढ कर मेरे (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) लिए कोई और सदमा नहीं हो सकता, फिर आप ने हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा और अपनी फूफी जान हज़रत सफिया रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा से फरमायाः खुश हो जाओ। अभी जिब्री अमीन अलैहिस सलाम मेरे पास आए

थे, इन्हों ने मुझे (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) खुशी के समाचार सुनाए के अवश्य हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु का धन्य नाम आकाश वालों में लिखा हुआ है। *हमज़ा बिन अबदुल मुत्तिल असद उल्लाह व असद रसूलुह* सैयदना हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु अल्लाह तआ़ला और इस के रसूल सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम के शेर हैं।

(अल मुसतदरक अला सहिहैन, लिल हाकिम, हदीस संख्याः 4869)

अहुद के युद्ध में क्यों के सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की शहादत हुई, इसी लिए इस का वर्णन करते हुए आप की शहादत की घटना का वर्णन किया जा रहा हैः-

उहुद का युद्ध

उहुद का युद्ध 3 हिज्री में हुआ। उहुद मदीने के एक विसाल पर्वत का नाम है, जि के संबंधित सत्य नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः-

यह (उहुद) वह पर्वत है जो हम से मुहब्बत व प्रेम करता है तथा हम इस से मुहब्बत करते हैं।

(सहीह अल बुखारी, हदीस संख्याः 4083)

यह सत्य व असत्यता का युद्ध इसी पहाड के दामन में हुआ। इस युद्ध में मुसलमानों के सत्य के कारवाँ की संख्या 700 थी, जिस में केवल 100 सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम शस्त्र-सज्जित व शस्त्रधारी थे, तथा खुरैश की सेना 3000 लोगों की थी। जिन में 700 शस्त्र-सज्जित व शस्त्रधारी थे।

सत्य व वास्तविकता के मार्ग में शहादत पाने वाले सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम की संख्या 70 थी। जब के अधर्म व असत्यता के 30 सदस्य नरक व जहन्नम गए।

शहीदों के मुखिया – सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की विशाल शहादत

उहुद के युद्ध में सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु अपनी सम्पूर्ण वीरता व शूरता के साथ मक्के वालों का सामना करते रहे। हिन्द बिन्त उ़खबा के वहशी नाम के एक हबशी गुलाम जो तीरंदाज़ी में विशेज्ञ थे तथा वह दोनों इस समय तक इसलाम से अभूषण नहीं हुए थे।

अर्थात इन से हिन्दह ने कहाः यदि तुम युद्ध में अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को शहीद करदो तो तुम्हें आजाद कर दिया जाएगा। वह सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को लगातार निशाना ढ़ाल रहे थे तथा मौक़े की तलाश में थे के जैसा ही मौक़ा मिले सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु पर निशाना लगाएंगे।

वह एक स्थान पर छिप कर बैठ गए, जब सैयदा अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु सामना करते हुए इन के खरीब से गुज़रे तो इन्हों ने छिप कर आप रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु पर एक तीर से वार किया जो सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के नाफ मुबारक से हो कर पीठ से निकल गया। तथा आप (रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु) की शहादत हो गई।

फिर हन्दह ने सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की लाश मुबारक का अनादर किया और आप के पेठ मुबारक चीर कर के इस से जिगर को निकाला और चबा कर चाबा किन्तु वह निगल ना सकी।

स्पष्ट रहे के बाद में हज़रत वहशी एवं हज़रत हिन्दह दोनों को इसलाम के वरदान से आभूषण हो गए, रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा। जिस समय आप की शहादत हुई इस समय आप की उम्र मुबारक 54 वर्ष थी। जैसा के इ़माम हाकिम मुसतदरक में रिवायत करते हैं।

(अल मुसतदरक अला सहिहैन लिल हाकिम, हदीस संख्याः 4880)

नेकियां करने वाले तथा कठिनाई को दूर करने वाले

जब सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की शहादत हुई तो रहमत वाले पैगम्बर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने अत्यन्त दुःख व शोक का प्रदर्शन किया तथा अत्यन्त अफसोस में हो गए यहाँ तक के आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) के पावन आँखों से आँस बहने लगे तथा जब हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने उहुद के शहीदों की नमाज़ पढाई तो हर शहीद की नमाज़ जनाज़ा के साथ सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की जनाज़े की नमाज़ भी पढाई।

इस अनुसार से आप को यह सौभाग्य प्राप्त है के 70 बार आप की जनाज़े की नमाज़ संपादन की गई। अर्थात शरह मुसनद अबु हनीफा, ज़खाइर अ़खबी तथा सीरत हलबिय में रिवायत हैः-

भाषांतरः- हज़रत इब्न शाज़ान रहमतुल्लाहि अलैह ने हज़रत अबदुल्लाह बिन मसऊ़द रदि की रिवायत वर्णन की है के- हम ने हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को कभी इतना दुःखी नहीं देखा जितना के आप हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की शहादत पर दुखी हुए। आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) ने इन्हें क़िबले की ओर रखा, फिर आप जनाज़े के सामने बैठे, आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) इस प्रकार दुखी हुए के सिसकियां भी लेने लगे, खरीब था के रंजीदगी के कारण आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) पर बेहोशी तारी हो जाए। आप यह फरमाते जातेः ऐ हमज़ा! ऐ रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के चाचा, ऐ रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के शेर! ऐ हमज़ा! ऐ निकयों को परिणाम देने वाले! ऐ हमज़ा! ऐ मुसीबतों व कठिनाइयों को दूर करने वाले ! ऐ हमज़ा! ऐ रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की ओर से प्रतिवाद करने वाले, हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने जब जनाज़े की नमाज़ संपादन फरमाते तो चार बार तकबीर फरमाते तथा आप ने हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की 70 बार तकबीर के साथ जनाज़े की नमाज़ संपादन फरमाई। इ़माम बग़वी ने इस रिवायत को अपनी मुअ़जम में व्याख्या की है।

(शहर मुसनद अबी हनीफा, जिल्द 1, पः 526 / ज़खाइर अल अ़खबी, जिल्द 1, पः 176 / अल सीरह हलबिय, जिल्द 4, पः 153 / समत अल नुजूम अल अ़वाली फी अना अल अवाइल वल तवाली, जिल्द 1, पः 161 / अल मवाहिब अल लदुनियह मअ़ शरह अल ज़ुरखानी)

प्रतिष्ठा व वैभव

सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की शहादत की जो घटना पेश आई तथा अल्लाह तआ़ला ने आप को जो उत्तमता व प्रतिभा प्रदान की, इस का वर्णन अनेक हदीसों की पस्तकों व इतिहास की पुस्तकों में मिलती है।

अर्थात मुसतदरक अला सहिहैन और इमाम तबरानी मुअ़जम औसत आदि में रिवायत हैः-

भाषांतरः- हज़रत अ़ली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है- आप ने फरमायाः जिस दिन अल्लाह तआ़ला सम्पूर्ण निर्माण को जमा करेगा मैं सब से पैगम्बरों में उत्तम ही रहेंगे तथा रसुलों के बाद सब से उत्तम शहीद होंगे तथा अवश्य शहीदों में सब से उत्तम हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु होंगे।

(अल मुसतदरक अ़लै सहिहैन लिल हाकिम, हदीस संख्याः 4864 / अल मुअ़जम अल औसत लि तबरानी, हदीस संख्याः 930 / जामअ़ अल हादीस लिल सुयूती, हदीस संख्याः 4003 / कंज़ुल उ़म्माल फी सुनन अल अखवाल वल अफआ़ल, अल फज़ाइल मिन खस्म अल अफआ़ल, हदीस संख्याः 36937)

शहीदों के मुखिया होने का सौभाग्य

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने अपनी मुबारक ज़बान से सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की विशाल शहादत से संबंधित आदेश फरमाया के आप समुदाय के शहीदों के सरदार व मुखिया हैं। जैसा के इ़माम हाकिम रहमतुल्लाहि अलैह ने रिवायत की हैः-

भाषांतरः- हज़रत जाबिर बिन अबदुल्लाह रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से वर्णित करते हैं, आप ने आदेश फरमायाः हमज़ा बिन अबदुल मुत्तलिब सम्पूर्ण शहीदों क सरदार व मुखिया हैं तथा एक वह हसती भी शहीदों के सरदार है जो किसी अत्याचारी राजा के सामने सत्य का झण्डा बुलंद करे तथा इसे भलाई का आदेश दे तथा बुराई से रोके एवं वह राजा इसे शहीद कर दे।

(अल मुसतदरक अला सहिहैन लिल हाकिम, हदीस संख्याः 4872)

अधिक इस रिवायत को इमाम तबरानी ने मुअ़जम अल औसत में इ़माम आ़ज़म अबु हनीफा रहमतुल्लाहि अलैह से रिवायत व्याख्या की है।

(अल मुअ़जम अल औसत लिल तबरानी, हदीस संख्याः 4227)

उपाधि – शहीदों के सरदार से संबंधित एक संदेह का स्पष्टीकरण

यहाँ यह संदेह व दुविधा ना किया जाए के हदीस मुबारक में शहीदों के सरदार सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को कहा गया है। तो फिर हज़रत इ़माम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को शहीदों के सरदार व मुखिया क्यों कहा जाता है?

सत्य यह है के सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु भी शहीदों के सरदार व मुखिया हैं और हज़रत इ़माम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु भी शहीदों के सरदार व मुखिया हैं।

क्यों के हदीस शरीफ में सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को भी शहीदों का सरदार फरमाया तथा इस हस्ती को भी शहीदों का सरदार व मखिया के उपाधि से आभूषण किया जो किसी अत्याचारी राजा के सामने सत्य को पेश करे तथा असत्यता व अधर्म के विरुद्ध अवाज़ उठाए यहाँ तक के शहीद हो जाए।

अर्थात सैयदना इ़माम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु अत्याचारी यज़ीद पीलद के विरुद्ध आवाज़ उठाई तथा सत्य का सन्देश पहुंचाया एवं आप (रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु) को इस अत्याचारी ने शहीद करवा दिया।

अतः इस हदीस शरीफ के आधार में हज़रत इ़माम हुसैन रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को भी शहीदों के सरदार व मुखिया कहा जाता है तथा दोनों का अपनी अपनी शान व प्रतिभा के अनुसार से शहीदों के सरदार होना हदीस शरीफ के आधार में सत्य व वास्तविकता पर बनी है।

उहुद के शहीदों की प्रतिष्ठा

उहुद के युद्ध में शहीद होने वाले सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम की विशेष जीवन से संबंधित सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमाया के अल्लाह तआ़ला ने इन्हें जन्नत में उच्च स्थान व दर्जा दान फरमाया है।

तथा वह अल्लाह तआ़ला की प्रदान किए हुए वरदानों से लाभ उठा रहे हैं जैसा के मुसनद इ़माम अहमद में हदीस शरीफ हैः-

भाषांतरः- सैयदना अबदुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है, इन्हों ने फरमाया, हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः जब "उहुद" में तुम्हारे भाई शहीद हो गए तो अल्लाह तआ़ला ने इन की आत्माओं को हरे पक्षियों के पेट में रखा, वह लोग सेराबी (भोजन के लिए) के लिए जन्नत की नदियों पर आते हैं। वह जन्नत के फल खातें हैं तथा अ़र्श के साये में सोने के कंदीलों (दीपक) में विश्राम करते हैं। जब वह अपने खाने तथा मशरूबात की सुगन्ध को पाय तथा अपने सर्वश्रेष्ठ ठिकाने को देखेतो कहने लगेः ऐ काश! हमारे भाई भी जान लेते के अल्लाह तआ़ला ने हमारे लिए कया-कया नेअ़मतें व वरदान रखी, ताके वह जिहाद से दूर ना रहें तथा युद्धभूमि व रणभूमि से पीठे ना हंटे। तो अल्लाह तआ़ला ने आदेश फरमायाः तुम्हीर ओर से यह खुशी के समाचार मैं इन तक पुंचाता हुं, फिर अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम पर यह आयत करीमा प्रकट कीः और जो लोग अल्लाह तआ़ला के मार्ग में शहीद किए गए इन्हें कभी मुर्दा ना समझना बल्कि वे अपने रब के पास जीवन हैं, रोज़ी पा रहे हैं। (सुरह आले इ़मरानः 03:169)

(मुसनद अ़ल इ़माम अहमद, मुसनद अबदुल्लाह बिन अल अब्बास, हदीस संख्याः 2430)

उहुद के शहीदों की ज़ियारत पर सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम एवं चारो खुलेफा की

सरकार नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का यह मुबारक स्वभाव था के आप हर वर्ष प्रबंध के साथ उहुद के शहीदों की ज़ियारत (मुलाकात व प्रादुर्भाव) के लिए तशरीफ लेजाया करते तथा हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के बाद आप का पालन में सैयदना सिद्दीख अकबर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु, सैयदना फारूख आज़म रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु तथा सयैदना उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु अपने-अपने खिलाफत के दौर में प्रत्येक वर्ष पाबंदी के साथ उहुद के शहीदों की ज़ियारत के लिए तशरीफ ले जाया करते थे।

सैयदना अ़ली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के खिलाफत के दौर में क्यों के आप ने कूफा को खिलाफत का स्थान बनाया था, इसी लिए आप का निवास कूपा में था। अर्थात आप के बारे में इस आदत का वर्णन ना मिलने के कारण से गलत फेहमी में व्यस्त नहीं होना चाहिए।

जैसा के तफसीर रूह अल मअ़ना, तफसीर खुरतुबी, तफसीर दुर्रे मन्सूर तथा तफसीर इ़ब्न कसीर आदि में रिवायत हैः-

भाषांतरः- हज़रत इ़ब्न जरीद रहमतुल्लाहि अलैह ने हज़रत मुहम्मद बिन इब्राहीम रहमतुल्लाहि अलैह से वर्णित व्याख्या किया है, आपने फरमायाः हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम प्रत्येक वर्ष के प्रारम्भ में उहुद के शहीदों की ज़ियारत के लिए तशरीफ लाते तथा फरमातेः

“सलामीत होतुम पर क्योंके तुम ने धीरज व सब्र किया, तो कया ही अच्छा परलोक व आखिरत का घर है” तथा इसी प्रकार प्रत्येक वर्ष हज़रत अबु बक्र सिद्दीख रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु, हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु तथा हज़रत उसमान ग़नी रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु भी ज़ियारत किया करते।

(तफसीर अल खुरतूबी, जिल्द 9, पः 312 / रूह उल मआ़नी फी तफसीर उल क़ुरान / अल दर्रु मन्सूर फी अत तवाइल / तफसीर इ़ब्न कसीर / अल सीरह अल नबूवह ला बिन कसीर, जिल्द 3, पः 90 / मग़ाज़ी अल वाखदी, दफन शुहदा उहुद, जिल्द 1, पः 311)

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है के सैयदना अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की मुबारक सीरत के रोशनी से हमारे जीवन को रोशन व उजागर करें।

आमीन

अनवारे-क़िताबत- 10

Xxxxxxx
Xxxxxxxxxx xxxxxxxxxxxxxxx---------xxx